

जब एक घायल नील गाय ने खोली सरकारी तंत्र की पोल....



1 अक्टूबर को मैं अमिताभ पार्क के मैदान (सेक्टर 15 ए, नोएडा) में खेलने गया तो देखा कि एक नील गाय वहाँ घायल पड़ी है। उसकी टाँगे टूटी हुई थी और पता चला कि वो दो दिन से वहाँ ऐसे ही पड़ी थी। मैं और मेरे साथी तत्काल हरकत में आए और हम संबंधित अधिकारियों और विभागों से संपर्क करने की कोशिश करने लगे। सबसे पहले हमने पुलिस को फोन लगाया और कई पशुओं के संरक्षण के लिए काम करने वाले एनजीओ से लेकर गौरक्षा विभाग, एससीपीए और तमाम विभागों से संपर्क करने की कोशिश की लेकिन किसी ने हमारी बात ही नहीं सुनी।

इसके बाद हमने जैसे तैसे एसडीओ, एसडीएम, वाइल्ड लाइफ एसओएस और वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट से संपर्क किया। हम दोपहर तीन बजे से ये कवायद करते रहे और हमे इन लोगों से संपर्क करते करते 9 बज गए। हैरानी की बात है कि वाइल्ड लाइफ एसओएस ने यह कहकर हमें टरका दिया कि उनके पास जाल की व्यवस्था नहीं है, लेकिन जब हम लोगों ने दबाव बनाते हुए कहा कि हम मीडिया को बुला लेंगे तो वे अपनी टीम भेजने को राजी हुए। ये सब होते होते रात के पौने 11 बज गए। इसी बीच नोएडा के वन विभाग और बर्ड सेंचुरी की टीम रात 9 बजे वहाँ पहुँच गई मगर उनके पास घायल नील गाय को ले जाने के लिए कोई वाहन ही नहीं था। इसी बीच हमने वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट इंडिया से संपर्क किया। रात 10 बजे उनकी टीम डॉक्टर के साथ वहाँ आई। नील गाय बुरी तरह घायल थी उसकी एक टाँग में हल्का और दूसरी में गंभीर फ्रैक्चर था। वाइल्ड लाइफ की टीम ने उसके इलाज का काम शुरू किया। टीम ने घायल नील गाय को बेहोश किया ताकि उसका सही तरीके से इलाज कर सके। इसके बाद इस टीम ने नेट में डालकर नील गाय को एक कार में लाद दिया और जिस कार में उसे लादा था उसकी साइज़ नील गाय से बहुत छोटी थी। इस तरह हम सब लोगों को रात के साढ़े 12 बज गए।

इसके बाद मैंने और मेरे मित्र अमित भारद्वाज, रोशन आरके, विकास झा, मोहित, कुलदीप शर्मा पार्क से चले गए, अगले दिन सुबह हमें क्रिकेट मैच खेलना था। लेकिन हमने ये सोचकर राहत महसूस की कि हमने एक बेजुबान जानवर की जान बचाई। वाइल्ड लाइफ की टीम ने हमसे इस मामले में पूरा फीडबैक भी लिया।

दूसरे दिन 2 अक्टूबर की शाम को मुझे वाइल्ड लाइफ एसओएससे एक फोन आया और बताया गया कि वह नील गाय अब जीवित नहीं बची है। हमें ये जानकर गहरा धक्का लगा कि जिस जानवर को बचाने

के लिए हमने इतनी कोशिश की उसका कोई नतीजा नहीं निकला ।

WILDLIFE SOS
11 239 Wildlife SOS, New Delhi 110019, India
Phone +91 11 4082189 / 4082190
Fax +91 4155 1424, Email: info@wildlifesos.org

RESCUE MEMO Date: / / Time: / /

Incident No. _____
Date of Call: _____
Call from: Cell Landline Other (Specify): _____
Call from member of Public: Other (Specify): _____
Person attending Call: _____ TIME OF CALL: _____

Incident Details:
Animal Species / Full Name: MUSKIE SINGH
Location: C-7, Sector-1A, NOIDA
Age: 10 Sex: M Photo taken by: _____
Description of Location: _____
Incident Brief: _____

Vehicle dispatched (if applicable):
No. of Vehicles: _____
Type of Vehicle: _____
Vehicle No. (if applicable): _____
Driver: _____
Other: _____

Time of Dispatch: _____ Time of Rescued Location: _____
Sketch of Location (if applicable): _____
Animal received by: _____ Animal rescued from location: _____
Special location visited: _____ Captured & released on location: _____
Other: (Specify): _____

Animal(s) / Report saved to: _____
Condition of Animal: _____ Sex: _____
ID Marked as: _____ Measurements: _____
Captive Remarks: (check to indicate if donation to WIL SOS or that this animal should stay in a facility for the owner) _____
Rescued No.: _____ (Signature): _____
Other Remarks: _____
No. vehicle dispatched: _____
NO VERIFICATION: _____

WORKING TO SAVE WILDLIFE

फिर भी हमें लगता है कि हमारी कोशिशों में कहीं चूक हो गई, लेकिन हमने ये तो कल्पना ही नहीं की थी कि वह नील गाय नहीं बचेगी, अगर हम 5-7 घंटे पहले उसकी मदद कर पाते तो उसकी जान बच सकती थी। वाइल्ड लाईफ की टीम द्वारा नील गाय को उठाकर ले जाने के बाद हमने मेनका गाँधी को भी ट्वीट कर इस मामले की जानकारी दी मगर उनकी ओर से भी कोई जवाब नहीं आया।

इस घटना से हमने यही सबक सिखा है कि आम आदमी को अपने स्तर पर अपना काम पूरी ईमानदारी से करना चाहिए और किसी भी समस्या या लापरवाही के लिए अपनी आवाज़ बुलंद करना चाहिए। हमें किसी की मदद करने में कभी कोई कोताई नहीं बरतना चाहिए। हमारी इस कोशिश में कई लोग हमारे साथ जुड़े और हमारी मदद के लिए आगे आए, जिनमें एससीपीए की अनुराधा की महत्वपूर्ण भूमिका रही जो मेरे फेसबुक पेज पर इस घटना की जानकारी व फोटो पोस्ट करने के बाद मुझे संबंधित विभागों व संस्थाओं के लोगों के नंबर देती रही।

अगर जिम्मेदार अधिकारी और विभाग लापरवाही दिखाएँ तो हम आम लोगों को अपनी जिम्मेदारी से नहीं भागना चाहिए। इस घटना से हमें यही सबक मिला है कि हमें अपने कर्तव्य को समझते पर्यावरण, पशुओं और हर जरूरतमंद की मदद के लिए आगे आना चाहिए।

आप सभी से निवेदन है कि ये संदेश ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाईये.....

सधन्यवाद

अभिषेक श्रीवास्तव

नोएडा (उ.प्र)